Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 6
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि का सहसंबंधात्मक अध्ययन

डॉ0 अवधेश कुमार
असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
शिक्षक–शिक्षा विभाग,
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),
प्रयागराज,उत्तर प्रदेश।

प्रिंस कुमारी
शोधछात्रा (शिक्षाशास्त्र)
शिक्षा संकाय,
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Publication Issue :
November-December-2023
Volume 6, Issue 6
Page Number : 101-109
Article History
Received : 02 Nov 2023
Published : 20 Nov 2023

सारांश–प्रस्तुत समस्या कथन में विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि का सहसंबंधात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन के उद्देश्य में कला एवं विज्ञान के छात्र–छात्राओं के के समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि का सहसंबंधात्मक अध्ययन किया गया है। समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए अध्ययनकर्त्री ने वर्णनात्मक शोध की सहसम्बन्धात्मक विधि का प्रयोग किया है। अध्ययन में प्रयागराज जनपद में स्थित केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है। अध्ययन हेतु उद्देश्यपूर्वक ढंग से विश्वविद्यालयों का चयन जिसमें प्रयागराज जनपद के एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय (इलाहाबाद विश्वविद्यालय), प्रयागराज, प्रो0 राजेन्द्र प्रसाद सिंह (रज्जु भैया) विश्वविद्यालय एवं नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय) का चयन किया गया है। अध्ययनकर्त्री द्वारा उपरोक्त तीनों विश्वविद्यालयों से 100 कला वर्ग एवं 100 विज्ञान के विद्यार्थियों को यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया है। इस तरह कुल 600 विद्यार्थियों (300 कला वर्ग एवं 300 विज्ञान) वर्ग के विद्याार्थियों को सम्मिलित किया गया है। न्यादर्श में चयनित विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता के मापन के लिए एल0एन0दूबे द्वारा निर्मित 'समस्या समाधन परीक्षण' एवं संवेगात्मक बुद्धि के मापने हेतु डॉ0 एस0के0 मंगल एवं श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित 'इमोशनल इंटेलिजेन्स इन्वेन्टरी' (ई.आई.आई.–एम.एम.) का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के संकलन व मूल्यांकन के पश्चात् अगला पद उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके प्रदत्तों का विश्लेषण करना होता है। इस अध्ययन में सम्बन्धों का अध्ययन करने के सहसम्बन्ध आघूर्ण गुणांक विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि– कला वर्ग के छात्रों के समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सम्बन्ध नहीं है जबकि कला वर्ग की छात्राओं तथा विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य धनात्मक सहसंबंध है।

मुख्य शब्द– विश्वविद्यालय, छात्र–छात्राएँ, कला–विज्ञान वर्ग, समस्या समाधान योग्यता, सांवेगिक बुद्धि, सहसंबंध गुणांक।

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

प्रस्तावना– अध्ययन में विश्वविद्यालय स्तर के छात्रों को सम्मिलित किया है। विश्वविद्यालयी स्तर पर विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक, सामाजिक और सांवेगिक परिवर्तनों का विकास बहुत हद हो चुका होता है साथ ही कुछ ऐसी सांवेगिक बुद्धि होती है जिसका विकास विद्यार्थियों के जीवन में आने वाली समस्याओं के साथ होता रहता है। दैनिक जीवन में, एक शिक्षार्थी जो विश्वविद्यालय स्तर पर होता है, उसे बहुत सारी समस्याओं का सामना करता है और उन्हें हल करने की कोशिश करता है। विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययन विद्यार्थियों के समक्ष बढ़ती पाठ्यक्रम, उनके आगे अपने लक्ष्य की प्राप्ति तथा व्यवसाय का चुनाव तथा जीवन में जिम्मेदारियों का बढ़ती प्रक्रिया के साथ उनमें समस्या बढ़ती जाती है जिसे उन्हें अपनी योग्यता से सुलझाना पड़ता है। दुनिया भर के छात्रों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो उन्हें निराश करती हैं। इससे छात्र समूहों के बीच निराशा पैदा होती है जिससे छात्र अशांति पैदा होती है। विद्यार्थियों का जीवन पहले की अपेक्षा कहीं अधिक कठिन हो गया है। उन्हें अध्ययन, समय, पैसा, रिश्ते, नौकरी, उम्मीद और अन्य परेशानियों से निपटना पड़ता है। जिसे वे पूर्व में सीखे गये अनुभवों, माता–पिता के पिछले अनुभव और शिक्षा हमेशा इस तरह के दबावों से निपटने में सक्षम नहीं होते।

विश्वविद्यालय स्तर पर पढ़ने वाले विद्यार्थियों के समक्ष जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बहुत सारे विकल्प नहीं होते है क्योंकि जो वे पाठ्यक्रम का अध्ययन कर रहे होते हैं वे उसी से सम्बन्धित क्षेत्र में नौकरी या व्यवसाय कर सकते हैं? आज भी विश्वविद्यालयी स्तर पर पूर्व में बनाये गये पाठ्यक्रमों में बदलाव कर उन्हें वहीं पाठ्यक्रम पढ़ाये जा रहे है जो पूर्व आयोगों एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति में निर्धारित की गयी है। आज विद्यार्थी अध्ययन के बोझ से दबे हुए हैं। पाठ्यक्रम पहले से कहीं अधिक व्यापक और जटिल हो गया है। वे न केवल अपने कंधों पर अध्ययन सामग्री का लगातार बढ़ता वजन उठाते हैं, बल्कि कक्षा छोड़ने के बाद भी गहन अध्ययन का बोझ भी उठाते हैं। साथ ही कुछ छात्र समाज के कमजोर वर्ग से आते हैं और उनके घर की वित्तीय स्थिति पर्याप्त नहीं है। यदि कोई छात्र परिष्कृत रूप से सुसज्जित नहीं है, तो यह उनके अध्ययन में बाधा डाल सकता है। **नाज, बीबी ऐसा (2020)** ने अध्ययन के माध्यम से सिफारिश की, कि रोजमर्रा की जिंदगी की चुनौतियों का समाधान करने के लिए समस्या समाधान योग्यता–आधारित तत्वों को पाठ्यपुस्तकों में शामिल किया जाना चाहिए।

वर्तमान में जहाँ बेरोजगार के साथ–साथ भौतिकता अधिक बढ़ गयी है वहीं इण्टरनेट एवं संचार के माध्यमों ने भी छात्रों को बहुत अधिक प्रभावित किया गया जिसमें सोशल मीडिया के मंचों ने छात्रों पर हावी हो गया है। आज के समय में छात्रों द्वारा पाठ्यक्रम में कम तथा सोशल मीडिया पर अधिक समय व्यतीत किया जा रहा है जिससे उनकी स्मरण शक्ति में कमी, तर्क–वितर्क की क्षमता का कम होना, लेखन शक्ति में गिरावट, निर्णय क्षमता में कमी, अन्तर्दृष्टि में कमी के साथ–साथ समायोजन में भी काफी कमी आयी है जिससे उनकी समस्याएँ दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और उन्हें कृत्रिम बुद्धि का सहारा लेना पड़ रहा है।

समस्या समाधान योग्यता विकसित करने की प्रक्रिया के लिए विभिन्न योग्यता की आवश्यकता होती है। इस योग्यता का विकास मानवता की प्रगति और लक्ष्यों का प्राप्त करने में महत्वपूर्ण है। व्यक्तिगत समस्या समाधान योग्यता विकसित करने की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि मनुष्य को कठिनाइयों का सामना करते हुए अपने विचारों के अनुसार कार्य करना पड़ता है।

समस्या के समाधान को ज्ञान का उपयोग करके और रचनात्मकता, मौलिकता या कल्पना को जोड़कर एक लक्ष्य तक पहुंचने में आने वाली कठिनाइयों को हराकर समाधान तक पहुंचने की प्रक्रिया के रूप में समझाया जा सकता है। समस्या समाधान योग्यता वाले लोग– नवोन्मेषी, जिम्मेदार, लचीला, साहसी, विभिन्न विचारक, स्व–विश्वासी, तार्किक, वस्तुनिष्ठ, आरामदायक, संवेगात्मक, ऊर्जावान, रचनात्मक और निर्माता की एक संरचना है, ये लक्षण जीवन की सफलता के लिए महत्वपूर्ण हैं।

मूर्ति, आर, एवं बाबू, आर (2012) ने अध्ययन में पाया कि– ग्रामीण और शहरी उच्च माध्यमिक छात्रों, एकल परिवार और संयुक्त परिवार के छात्रों के बीच उनकी समस्याओं में महत्वपूर्ण अंतर था। **संगीता, शर्मा एवं कुमार (2013)** द्वारा किये गये अध्ययन परिणाम बताते हैं कि किशोरियों में सामाजिक एवं वैयक्तिक समस्याएँ सार्थक रूप से उच्च पायी जाती है। **शिवनाथ व अन्य**

(2015) द्वारा किये गये अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि – जो युवा अपनी समस्या व्यक्त नहीं कर पाते उनमें उच्च स्तरीय चिन्ता पायी जाती है। जिन युवाओं में चिन्तन का स्तर उच्च था उनमें सांवेगिक एवं सामाजिक समायोजन निम्न स्तरीय पाया गया है। **सिंह (2016)** ने महाविद्यालयी विद्यार्थियों की युवा समस्या का अध्ययन किया एवं पाया कि महाविद्यालय स्तर के महिला एवं पुरुष विद्यार्थी पारिवारिक समस्या, कॉलेज समस्या, सामाजिक समस्या एवं वैयक्तिक समस्या के सन्दर्भ में एक दूसरे के समान है। **वाघमारे (2017)** द्वारा किये गये अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि महिला विद्यार्थियों के पास पारिवारिक एवं स्कूल/कॉलेज समस्या पुरुष विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है एवं महिला एवं पुरुष विद्यार्थी वैयक्तिक एवं सामाजिक समस्या के सन्दर्भ में एक–दूसरे के समान है।

अध्ययन की समस्या, विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि का सहसंबंधात्मक का पता लगाना है। पूर्व मनोवैज्ञानिकों एवं शोधकर्त्ताओं द्वारा समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि के बीच संबंध का अध्ययन किया गया है और अपने तर्क प्रस्तुत किये गये है। चेर्निस, (2000) यह पुष्टि करते हैं कि कहा कि सांवेगिक एवं सामाजिक क्षमताएँ, संज्ञानात्मक प्रदर्शन और सोच तथा व्यवहार की प्रक्रियाओं में एक महत्वपूर्ण आयाम है, जो सफल होने और अनुकूल होने की एक व्यक्ति की क्षमता के विकास में सकारात्मक रूप से परिलक्षित होता है, परिणामों ने यह भी दिखाया कि सांवेगिक बुद्धि, अकादमिक सफलता के लिए आवश्यक आवश्यकताओं में से एक है। **शर्मा, दर्शना एवं बंधना (2012)** के परिणाम से पता चला कि सांवेगिक बुद्धिमत्ता और घर का माहौल समस्या समाधान योग्यता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। **डेनिज (2013)** द्वारा अध्ययन में पाया कि सांवेगिक बुद्धि सार्थक रुप से समस्या समाधान कौशल से सहसम्बन्धित है। सांवेगिक बुद्धि में विकास करके समस्या समाधान कौशल को सुधारा जा सकता है।

दूसरी ओर, अध्ययनकर्त्री ने समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सम्बन्ध से संबंधित कुछ शोध और अध्ययनों की समीक्षा के माध्यम से यह जानकारी हुई कि माध्यमिक स्तर तक के विद्यार्थियों पर समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन बहुत हुए है लेकिन विश्वविद्यालय स्तर के छात्रों पर शोधार्थिनी को बहुत ही कम शोध प्राप्त हुये है।

अध्ययन का उद्देश्य– प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्रों के समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि का सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।
2. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि का सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।
3. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्रों के समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि का सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।
4. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि का सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ– अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है।

1. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र के समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि में सार्थक सहसंबंध नहीं है।
2. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि में सार्थक सहसंबंध नहीं है।
3. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्र के समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि में सार्थक सहसंबंध नहीं है।
4. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि में सार्थक सहसंबंध नहीं है।

शोध विधि– समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए अध्ययनकर्त्री ने वर्णनात्मक शोध की सहसम्बन्धात्मक विधि का प्रयोग किया है।

जनसंख्या – अध्ययन में प्रयागराज जनपद में स्थित केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श का चयन– अध्ययन हेतु उद्देश्यपूर्वक ढंग से विश्वविद्यालयों का चयन जिसमें प्रयागराज जनपद के एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय (इलाहाबाद विश्वविद्यालय), प्रयागराज, प्रो0 राजेन्द्र प्रसाद सिंह (रज्जु भैया) विश्वविद्यालय एवं नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय) का चयन किया गया है। अध्ययनकर्त्री द्वारा उपरोक्त तीनों विश्वविद्यालयों से 100 कला वर्ग एवं 100 विज्ञान के विद्यार्थियों को यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया है। इस तरह कुल 600 विद्यार्थियों (300 कला वर्ग एवं 300 विज्ञान) वर्ग के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण– न्यादर्श में चयनित विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता के मापन के लिए एल0एन0दूबे द्वारा निर्मित 'समस्या समाधन परीक्षण' (PSAT) एवं संवेगात्मक बुद्धि के मापने हेतु डॉ0 एस0के0 मंगल एवं श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित 'इमोशनल इंटेलिजेन्स इन्वेन्टरी' (ई.आई.आई.–एम.एम.) का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ–

प्रदत्तों के संकलन व मूल्यांकन के पश्चात् अगला पद उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके प्रदत्तों का विश्लेषण करना होता है। इस अध्ययन में सम्बन्धों का अध्ययन करने के सहसम्बन्ध आघूर्ण गुणांक विधि का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण–

1. **विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्रों के समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि का सहसंबंधात्मक अध्ययन का विश्लेषण एवं व्याख्या–**

सारणी संख्या 1

विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्रों के समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक

क्र0सं0	समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि	न्यादर्श (N)	सहसम्बन्ध गुणांक r	सारणी मान एवं परिणाम
1	समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि	150	0.207	.01=.208 असार्थक

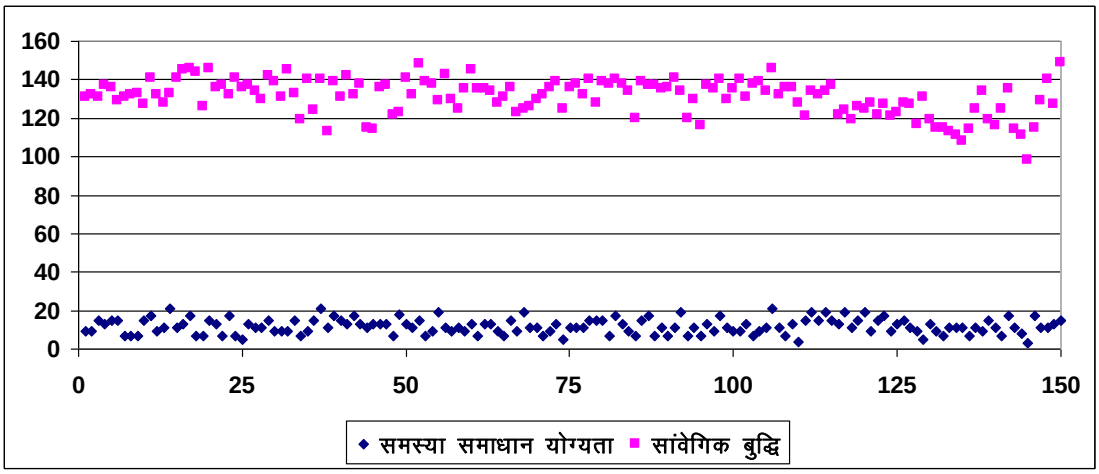

विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्रों के समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक 0.207 है जो कि जो स्वतंत्राश 148 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर गुणनफल– आघूर्ण सहसंबंध गुणांक के क्रान्तिक–मान 0.208 से कम है। अतः कहा जा सकता है कि दोनों चरों के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं है अर्थात् विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्रों की समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि में सार्थक सहसंबंध नहीं है। हम कह सकते हैं कि विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्रों की सांवेगिक बुद्धि में वृद्धि एवं कमी का उनकी समस्या समाधान योग्यता में कोई संबंध नहीं है।

शोधार्थिनी द्वारा प्राप्त परिणाम के सापेक्ष पूर्व अध्ययन परिणाम में **कुमार. एम. (2020)** के अध्ययन के नतीजे बताते हैं कि उच्चतर माध्यमिक छात्रों के बीच रचनात्मकता और समस्या समाधान योग्यता के बीच कोई संबंध नहीं है।

जबकि शोधार्थिनी द्वारा प्राप्त परिणाम के विपरीत परिणाम **आर, सोलोमन एवं गुगेनहेम संग्रहालय (2010)** के अध्ययन परिणाम, संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के घटकों के बीच संबंधों के बीच अंतर को रेखांकित करते हैं, और संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक समस्या समाधान हस्तक्षेपों के माध्यम से लोगों के मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने की संभावना का समर्थन करते हैं।

2. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि का सहसंबंधात्मक अध्ययन का विश्लेषण एवं व्याख्या–

सारणी संख्या 2

विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक

क्र0सं0	समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि	न्यादर्श (N)	सहसम्बन्ध गुणांक r	सारणी मान एवं परिणाम
1	समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि	150	0.274	.01=.208 सार्थक

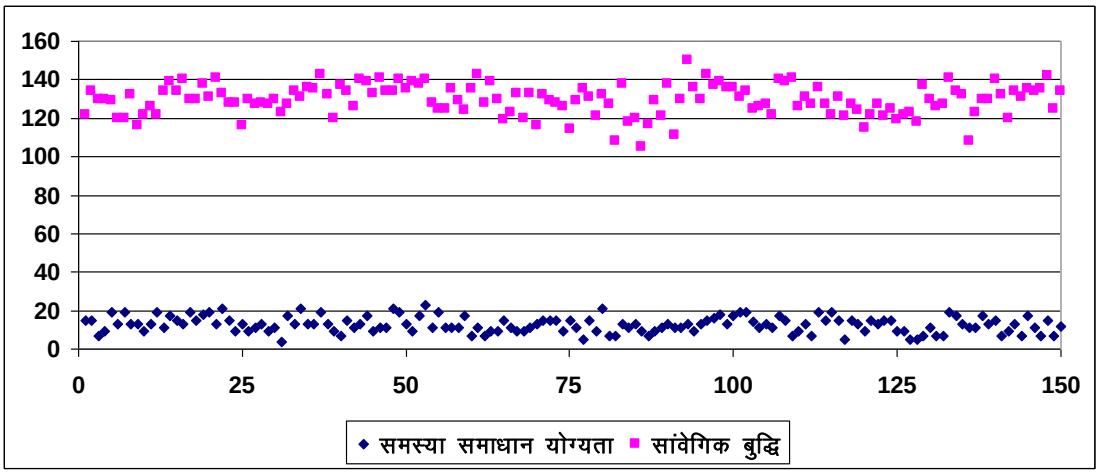

विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक 0.274 है जो कि जो स्वतंत्राश 148 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर गुणनफल– आघूर्ण सहसंबंध गुणांक के क्रान्तिक–मान 0.208 से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि दोनों चरों के मध्य सार्थक सहसंबंध है अर्थात् विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि में सार्थक सहसंबंध है। हम कह सकते हैं कि विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में वृद्धि एवं कमी का उनकी समस्या समाधान योग्यता में संबंध है।

3. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्रों के समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि का सहसंबंधात्मक अध्ययन का विश्लेषण एवं व्याख्या–

सारणी संख्या 3

विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्रों के समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक

क्र0सं0	समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि	न्यादर्श (N)	सहसम्बन्ध गुणांक r	सारणी मान एवं परिणाम
1	समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि	150	0.344	.01=.208 सार्थक

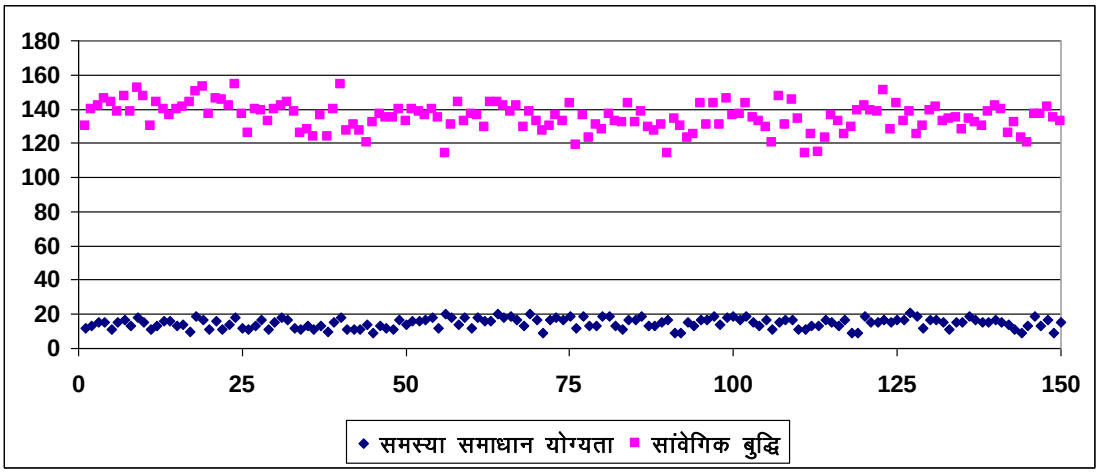

विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्रों के समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक 0.344 है जो कि जो स्वतंत्राश 148 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर गुणनफल–आघूर्ण सहसंबंध गुणांक के क्रान्तिक–मान 0.208 से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि दोनों चरों के मध्य सार्थक सहसंबंध है अर्थात् विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्रों की समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि में सार्थक सहसंबंध है। हम कह सकते हैं कि विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्रों की सांवेगिक बुद्धि में वृद्धि एवं कमी का उनकी समस्या समाधान योग्यता में संबंध है। विश्वविद्यालय स्तर पर विज्ञान वर्ग के छात्रों की सांवेगिक बुद्धि में वृद्धि का उनके समस्या समाधान योग्यता में वृद्धि तथा सांवेगिक बुद्धि में कमी का उनकी समस्या समाधान योग्यता में कमी होगी।

4. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि का सहसंबंधात्मक अध्ययन का विश्लेषण एवं व्याख्या–

सारणी संख्या 4

विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक

क्र0 सं0	समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि	न्यादर्श (N)	सहसम्बन्ध गुणांक r	सारणी मान एवं परिणाम
1	समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि	150	0.373	.01=.208 सार्थक

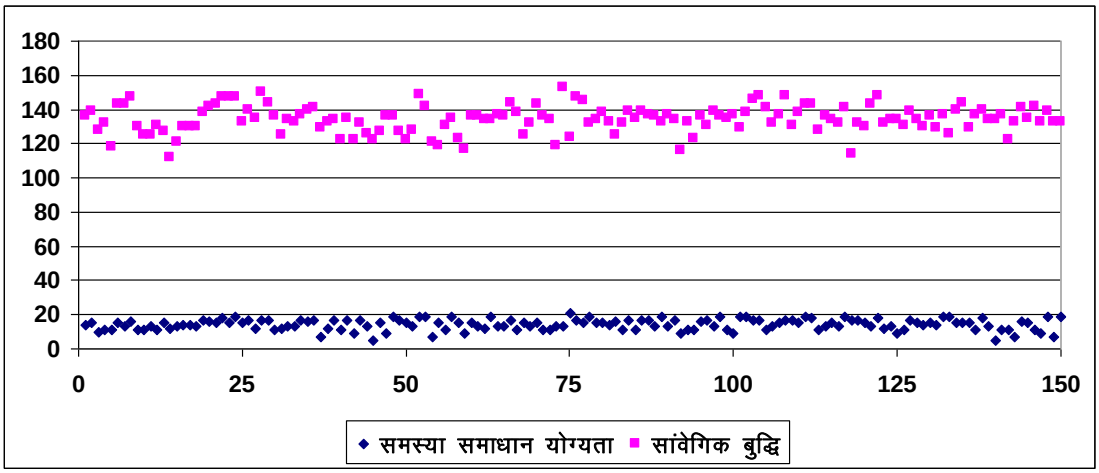

विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक 0.344 है जो कि जो स्वतंत्राश 148 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर गुणनफल–आघूर्ण सहसंबंध गुणांक के क्रान्तिक–मान 0.208 से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि दोनों चरों के मध्य सार्थक सहसंबंध है अर्थात् विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि में सार्थक सहसंबंध है। हम कह सकते हैं कि विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में वृद्धि एवं कमी का उनकी समस्या समाधान योग्यता में संबंध है। विश्वविद्यालय स्तर पर विज्ञान वर्ग के छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में वृद्धि का उनके समस्या समाधान योग्यता में वृद्धि तथा सांवेगिक बुद्धि में कमी का उनकी समस्या समाधान योग्यता में कमी होगी।

निष्कर्ष– अध्ययनोपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्रों के समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य धनात्मक सहसंबंध है।
- विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य धनात्मक सहसंबंध है।
- विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्रों के समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य धनात्मक सहसंबंध है।
- विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य धनात्मक सहसंबंध है।

शोधार्थिनी द्वारा प्राप्त परिणाम के सापेक्ष पूर्व अध्ययन परिणाम में **भूयान (2009)** के अध्ययन के परिणाम स्पष्ट करते है कि विज्ञान विषय के छात्रों के प्रदर्शन पर बुद्धि तथा समस्या समाधान योग्यता सार्थक प्रभाव डालते है। **आर, सोलोमन एवं गुगेनहेम संग्रहालय (2010)** के अध्ययन परिणाम, संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के घटकों के बीच संबंधों के बीच अंतर को रेखांकित करते हैं, और संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक समस्या समाधान हस्तक्षेपों के माध्यम से लोगों के मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने की संभावना का समर्थन करते हैं। **शर्मा, दर्शना एवं बंधना (2012)** के परिणाम से पता चला कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और घर का माहौल समस्या समाधान योग्यता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। **डेनिज (2013)** द्वारा अध्ययन परिणाम में पाया कि सांवेगिक बुद्धि सार्थक रुप से समस्या समाधान योग्यता से सहसम्बन्धित है। सांवेगिक बुद्धि में विकास करके समस्या समाधान योग्यता को सुधारा जा सकता है। **कारमेली व अन्य (2013)** के अध्ययन में परिणाम इस प्रकार प्राप्त हुआ कि सांवेगिक बुद्धि जिसकी ज्यादा होती है उसका उदारता का स्तर उच्च होता हैं। साथ ही यह सृजनात्मकता को बढ़ाता है। **रामी, बेडाकथी व जामशीदी (2014)** के अध्ययन का परिणाम, सृजनात्मकता के सहपैमाना तथा सांवेगिक बुद्धि में सार्थक तथा धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। **अरोरा (2016)** ने द्वारा प्राप्त अध्ययन परिणाम, सांवेगिक बुद्धि तथा सृजनात्मक के मध्य मजबूत धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एरोक्या, मरयचेलवी, राजन संगीता (2013). द रिलेशनशिप बिटवीन इमोश्नल इन्टेलिजेन्स एण्ड द एकेडमिक परफारमेन्स अमगं फाइनल इयर अण्डर ग्रेजुएट्स, यूनिर्वसल जर्नल ऑफ साइकोलोजी, 1 (2). (41–45)।
2. कौट्स, दीपा सिकन्द (2016). इमोशनल इंटेलिजेन्स एण्ड ऐकेडमिक स्ट्रेस एमंग कॉलेज स्टूडेन्ट्स, एजूकेशनल क्यूएस्ट–एन इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजूकेशन एण्ड एप्लाइड सोशल सांइसेस, 7)3), पृ0 149–157
3. कुमार, प्रवीण एवं शर्मा, दिनेश (2017). शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में संवेगात्मक बुद्धि की भूमिका : एक अध्ययन, शृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका, वॉल्यूम–5, इश्शू–4, पृ0 172–175
4. पैरी, मंजूर अहमद (2020). द स्टडी ऑफ डिफरेन्स इन इमोशनल इंटेलीजेन्स ऑफ अण्डर–ग्रेजुएट स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू आर्ट्स एण्ड सांइस स्ट्रीम, इण्टनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस, सांइस्टिफिक रिसर्च, वॉ0 2, इश्शू–1, पृ0 59–64
5. राव, एन. पापा (2013) उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों जन्मक्रम का उनके संवेगात्मक बुद्धि एवं समस्या समाधान योग्यता पर प्रभाव का अध्ययन, शोध प्रबन्ध, पी–एच.डी., पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

6. सिंह, यशपाल एवं शर्मा, योगेन्द्र कुमार (2020). उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं बहु बुद्धि का अध्ययन, जर्नल ऑफ इर्मिजिंग टेक्नोलॉजिस एण्ड इनोवेटिव रिसर्च, वॉ0 10, इश्शू–4, पृ0 1840–1850

7- Shahba, Samaneh and Allahvirdiyani, Khalil (2013). Comparative Study of Problem-solving and Emotional Intelligence on Decreasing of Third Grade Girl Students' Aggression of the Rajaee Guidance School of Tehran, Procedia - Social and Behavioral Sciences 84, pp. 778 – 780

8. V. Lincy Pushpa and dr. K.A. Sheeba (2022). A study on Problem-Solving Ability among Higher Secondary Students, Research and Reflections on Education ISSN 0974 - 648 X(P) Vol. 20 No. 4 Oct-Dec 2022